यज्ञ से भूमि-शोधन

स्वामी विप्रदेव | पतंजलि संन्यासाश्रम

भूमि प्रदूषण के निवारण हेतु यज्ञ महत्वपूर्ण है, जिससे पृथ्वी सस्यादि से पुष्ट होकर सुख देने वाली होती है। यथा-

मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्।
पिपृतां नो भरीमभिः।।[1]

विस्तृत द्युलोक तथा भूमि हमारे इस यज्ञ का सेवन करे। यज्ञ से पोषण प्राप्त कर हमारा भरण-पोषण करें।

भूम्यां देवेभ्यो ददति हव्यमलंकृतम्।
भूम्यां मनुष्या जीवन्ति स्वधयान्नेन मर्त्याः।। [2]

यज्ञ भूमि में देवताओं के लिये अलंकृत हव्य प्रदान करता है। उसी भूमि में मरणशील मनुष्य स्वधा और अन्न से जीवन धारण करते हैं। वह भूमि हमें वृद्धावस्था तक प्राणप्रद वायु प्रदान करे।

यज्ञ इद्रमवर्धयद्भूमिं व्यवर्तयत।
चक्राण ओपशं दिवि।।[3]

यजमान द्वारा अनुष्ठीयमान यज्ञ वर्षाकारक इन्द्र की शक्ति को बढ़ाता है और भूलोक को विविध अनाज आदि से पुष्ट करता है।

प्रदूषण से भूमि फलवती नहीं होती, जिसे आचार्य सायण ने अनृत का परिणाम लिखा है। उन्होंने ऋग्वेद के मत्रांश **सत्येनोत्तभिता भूमिः** का भाष्य किया है **'असति सत्ये भूम्यां सस्यादयो न फलन्ति। यज्ञे यजमानदत्तेन खल्वाहुत्या देवा उपजीवन्ति।।'** सत्यविरोधी अधर्माचरण से भूमि में अन्नादि नहीं फलते। यजमान के द्वारा यज्ञ में दी गई आहुति से देवगण नया जीवन पाते हैं। अगले मन्त्र के सोमेन पृथ्वी मही पर भाष्यकार का अभिमत है।

आहुत्यात्मनाग्नौ हुतेन भूमिः महती भवति।
आहुत्या वृष्टिद्वारेण सस्यादिसम्पतेः।।[4]

अग्नि में घी सामग्री की हवि देने से भूमि महती होती है, वर्षा द्वारा अनाजादि प्रवृद्धि के कारण औषधि से प्रवर्धित पृथ्वी बलवती होती है।

यजुर्वेद के मन्त्रों में भी पृथ्वी को यज्ञ के द्वारा समर्थ बनाने की कामना की गई है। यथा-

पृथिवी च मे यज्ञेन कल्पताम्।
अश्मा च मे मृतिका च मे गिरयश्च मे पर्वताश्च मे सिकताश्च
मे वनस्पतयश्च मे हिरण्यं च मेऽयश्च मे श्यामं च मे लोहं च
मे सीसं च मे त्रपु च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।[5]

विस्तृत भूमि और उसमें स्थिर पत्थर, हीरा आदि रत्न, मिट्टी, मेघ, छोटे बड़े पर्वत तथा उसमें होने वाले पदार्थ, रेत, बड़ और आम आदि वृक्ष, सोना, चांदी, लोहा, तांबा, नीलमणि, चंद्रमणि, सीसा और लाख, जस्ता एवं पीतल आदि ये सब यज्ञ से समर्थ हों।

अन्यत्र **'पृथिवीं भस्मनापृण**[6]**'** एवं **'पृथिवीं भस्म स्वाहेति**[7]**'**, पृथ्वी को भस्म से भरने का संकेत है, जो यज्ञ तथा स्वाहा क्रिया का ही परिणाम है। यज्ञ की भस्म के द्वारा उत्तमोत्तम औषधि का क्षारतत्व पृथ्वी को प्राप्त होता है।

इस पृथ्वी पर हम कृषि करते हैं इसके लिये कहा गया है- **'कृषिश्च मे यज्ञेन कल्पताम्**[8]**'** भूमि को उपयोगी बनाते समय यज्ञ का प्रयोग करें, पृथिवी समर्थ एवं शक्तिशाली बनेगी।

1. ऋग्वेद- 1.22.13
2. तदैव- 12.1.22
3. ऋग्वेद- 8.14.5
4. ऋग्वेद- 10.85.1-2
5. यजुर्वेद- 18.13.18
6. यजुर्वेद- 6.21
7. मैत्रायणी संहिता- 3.9.4
8. यजुर्वेद- 18.9